

चकालें गगुदायां वा साधयत्सर्गं सर्वदा भायथमं तावत्तु वृद्ध वापि सत्त्वा न
त्रिषण्णगमनादिकं कृत्वा दक्ष विरुम्भदाह वत् ॥ यथर्ममेवो द्विकिय कर्म
विलावयत् ॥ रुक्मियमृदि भांयमायुका वरुथं न्येका विस्य वत् ॥ वरुर्वं श्रीविद
नाकि ॥ तस्य १० रुक्मी नमस्तु ॥ ॐ वज्रवनाली कीलथं रूढ ॥ पूर्व ॥ ॐ वज्रक
लवचरं रूढ ॥ दद्विं ॥ ॐ वज्रवधुमस नमस्तु रूढ यत्तु मरु रूढ ॥ पाश्चिं ॥ ॐ वज्र

मूकवकर २ कर्क २ हं रुद्र ॥ उरु ॥ उंचधुमहावापनाभिधुंनकर २ मावलश्वन २
द्वय २ हं हं रुद्र ॥ कीलयक ॥ सर्वे इष्टयुद्धाजीकिनीनांमयदवंशरुद्रकपिभा
वाद्यालुवविष्णुविकथकोलयत्सर्वे इष्टाजीमकुवाश्वनकर १ शिवजी ॥ उं
आ १ हं क १ यथालु ॥ उं शु न्नीकां हानवजस्वरावात्मकाहं ॥ पुनः १ विभुद्धिमनस्म
न ॥ उं १ हं वंसा ॥ उत्पारयक ॥ सर्वे विरुनाधर्मधारुस्वरावात्मकाहं ॥ क १ क १

सामान्यायप्रकाशनादिसमादकहृदि विहावयक ॥ हं कावकृष्णनिर्गमसूर्यमधु
लमानुससूत्रनादिर्वोनदहवं ॥ यच १ वस्मीसमात्रकीयकृष्णाय १ भाजिनी ॥ क १
संयुक्तवृद्धाजीगुहयुष्मानुसायना १ मोक्षा २ दि सत्त्वानां कृष्यायस्य दधना १
लुविनाध्यायाक ॥ हं कावकृदिनिर्गमकाहं कावयविनर्गसूर्यमधुली ॥ उकाववि
निर्गमयसंसारहृनी ॥ उं कावयविनर्गखड्गयनिधानंयुक्कविसत्त्वार्थरुद्रकी

विभावयत् ॥ दिव्यं नलमौलिर्नगाधयत् ॥ श्रवायविभुमिर्नः ॥ अर्द्धजानूविकोः
 तं सद्यो खड्गविरुषिनी ॥ सूर्यमधुलसंशुके सुटितवृद्धासुनिर्मलं वामकं नि
 योमकयत् ॥ मुद्राय ॥ भाहिनी ॥ वायुवर्मायनिधानं क ॥ १७ ॥ मौलिनिलं धुक ॥ अर्द्ध
 शीप्यसंकासीनिषीयमान उद्धर ॥ वरुमौलरुयानक ॥ नकवद्धयवीवदि
 जलजटासहिनी ॥ खड्गव ॥ गगनसंवनाना नलपरभाहिनी ॥ नकद्वयं हावमा

नमु ॥ धीवधुमहावाघनी ॥ हावयस्त्रिविरुनवृद्धादुक्तरं न ससयः ॥ १८ ॥ निग
 त्वासविनयमन्त्रधावनासनी ॥ नगार्थमरुना ॥ १९ ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ वधु
 नयः ॥ वट ॥ पट ॥ रक ॥ रय ॥ सुल ॥ सर ॥ यस्त्र ॥ लय ॥ रुन ॥ रय ॥ सर ॥ वध ॥ रज ॥ मय
 ॥ रुम ॥ यर ॥ मा ॥ रुय ॥ सव ॥ मय ॥ नम ॥ खव ॥ ननी ॥ क ॥ नर ॥ सव ॥ जवि ॥ नी ॥ नय ॥ रु ॥ मय
 भावव्याधियक्षात्नी ॥ शोभय ॥ मय ॥ मावय ॥ नव ॥ वध ॥ नक ॥ न ॥ रु ॥ य ॥ व ॥ रु ॥ न

धुमसावासनसर्वाहाययति॥ॐ वधुमसावाखधायहंरुद्रस्वाहा॥प्रथममनुवाजावा
सर्वकर्मोवादि॥ॐ ह्रीं ह्रीं येनमथनजाकयरक्षारयरसर्वकामप्रभाधयनहं
रुद्र॥ॐ वधुमसासन॥प्रथमं खखखादि॥भाषय२मन२मानय२हंरुद्र॥ॐ
अवनेकीलयहंरुद्र॥ॐ सर्वमालयहंनहंरुद्र॥ॐ ह्रीं ममाहनायहंरुद्र॥ॐ
यममर्दनमर्दयहंरुद्र॥ॐ क्षाह नमस्कोधनिःहृदनायहंरुद्र॥ॐ यय२यवा

अयानिहं कयन्त॥हा२हा२स्व२य२उत्सादय२शिशुंकर्म॥कवूरॐ वधुमसा
वापनहंरुद्र॥ॐ नक्ष२संव२यव२यव२मसाकाहवृषाय॥वल२व
लय२ॐ वधुमसावापनहंरुद्र॥ॐ विकानननयव२हं३ना॥जम्भय२वज
वधुमसासनहंरुद्र॥ख०ग०हंसाहिहीहंरुद्र॥ॐ वधुमसावापनहंरुद्र॥
ॐ दह२पव२मथ२कल२कालय२भाषय२गृह२हं२जन२जान२ॐ

[illegible]

नीयं भाषयन् रूढं ॥ ॐ वक्षुमहावीर्यं रूढं ॥ ॥ ॐ किमनुपठनं वा
पूर्वोक्तं वा वनाविधिं वक्ष्ये कथां यत् ॥ मनुदेवताकावयं ॥ नीलं सुलेकां
आत्मा जयवागारुनिनिविशुक्ता ॥ आत्मा वा यत् ॥ उक्तं वेत्तु न मानं धत्वा
कान्तवीर्यं ननु कदा ॥ नमो गणेशाय तस्मै नुक्ता वा यत् ॥ यावत् कथाया न यावत् यत्
स्वयं भक्तिविशुद्धमनुस्मरेत् ॥ कदा तस्मै गणेशाय तस्मै नुक्ता वा यत् ॥

यावद्द्वयं न जाय खेद भक्ति विमुक्ति ममुक्ति मनुस्मयन् ॥ कदा स्म या गता वि-
 हान ॥ या गयी रश्मि दृश्या भृङ्गं नादि न सर्वे वगी कस्य वनो विह्वल ॥ यश्च भालि
 यश्च देव कृत्वा न स्यात्तय दि भदि भियन् न स ह न दयि वा न नानि वा भ ॥ ३५ ॥
 न घानं सर्व माया विवर्जितं ॥ माया मास मा सो वाधिक स्या माया विवर्जयन् ॥ न
 क्षक न रश्मि विलक्षणा किनी गामनं यश्च दृश्ये लक्ष्मं किन् न द भन

क्षणीय किं चित् कुरु कुरु म ॥ क्षक न का न यद्द्वयं काटि जाय न र व-
 त्ति द्विद व का न मूर्ति शिः किन् ॥ स फ काटि जाय न जाय न खे व न द
 ॥ भावी विनसि ता यागी मनु या नेदि न क था जय त्म रु सर्व द्या व ज द यो भुय
 मिनि व या या कि विमु द्या व रु क्ष न क ल्य य न ॥ सर्व सु सु विरु न ना गा ना
 ग विवर्जयन् ॥ अक्षो ह्य न मा द्य क सर्व न सो द क्षो ह्य मो ले न सु री ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
यद्यप्यहं कुरुपुत्रोऽस्य कुरुपुत्रोऽस्य कुरुपुत्रोऽस्य ॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
तथापि मया यद्यप्यहं कुरुपुत्रोऽस्य कुरुपुत्रोऽस्य कुरुपुत्रोऽस्य ॥ २ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
यदि कुरुपुत्रोऽस्य कुरुपुत्रोऽस्य कुरुपुत्रोऽस्य ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥